Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

पं.सोहन लाल के काव्य में राष्ट्रीय भावना

डॉ. गुंजन त्रिपाठी
1N/5C तिलक नगर,
अल्लापुर, प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश– पं. सोहन लाल द्विवेदी की कविताओं में राष्ट्रीय भावना कई रूपों में मुखरित हुई है। द्विवेदी जी ने भारत के अतीत, संस्कृति पुराणों वेदों, संस्कारों आजादी के वीर नायकों, किसानों और अपने आदर्श महात्मा गांधी पर उत्कृष्ट रचनाएं प्रस्तुत की है। भारत के ग्रामीण जनों से, गरीबी से, कच्चे लिखे पुते घरों से, प्रकृति से, समाज से उनका लगाव प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है। राष्ट्रीय कवि श्री द्विवेदी जी भारत के उन नौनिहाल कर्णधारों पर भी कई प्रकार की सुन्दर और लालित्य पूर्ण रचनाएं किये हैं।

मुख्य शब्द– राष्ट्रीय भावना, मुखरित, प्रत्यक्ष नौनिहाल, लालित्य।

भारतीय संस्कृति के नवनीत वेदों में देश–प्रेम की पुनीत भावना से परिपूर्ण असंख्य सूक्त है। वेदों में जननी और जन्मभूमि को स्वर्ग से भी बढ़कर माना गया है। यह जन्मभूमि से प्रेम, राष्ट्र से प्रेम हमारी संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। द्विवेदी जी में यह भावना कूट–कूट कर भरी हुई है। राष्ट्र–प्रेम को व्यक्त करने के लिए कविजन राष्ट्र के गौरवमय अतीत का गान करते हैं यही उनकी रचनाओं का मूलाधार है। अपनी संस्कृति की श्रेष्ठता निम्न पक्तियों में व्यक्त की है–

''सच पूछो तो आज मिला है, पृथ्वी को पावन आलोक
वह अशोक बन गयी स्वयं ही पाकर पृथ्वीपाल अशोक
अर्थशास्त्र, साहित्य नीति की जटिल ग्रंथियों की उलझाव
सुलझाते थे विज्ञ ज्ञानगुरु फैलाते आनन्द प्रभाव।

राष्ट्र–प्रेम से ओत–प्रोत द्विवेदी जी ने इतनी अधिक और ऐसी ओजस्वी कविताएं लिखी है कि उन्हें राष्ट्रीय कवि के सम्माननीय विरुद्ध से विभूषित किया गया है। राष्ट्र प्रेम में डूबी हुई उनकी कुछ काव्य–पक्तियां दृष्टव्य हैं–

''मुझे नहीं है लोभ, राज्य के वरदानी वरदान का

मुझे नहीं है लोभ, राज्य के सम्मानी सम्मान का।

मैं जनता का साथी हूँ, मैं कवि हूँ हिन्दुस्तान का।''

धर्म तथा आध्यात्मिकता वह अनमोल निधि है जिनके कारण भारतीय संस्कृति गरिमा के उच्च शिखर पर आसीन है।

संघर्षरत् विश्व को अंहिसा नामक कल्याणकारी अस्त्र से परिचित कराया है। कवि द्विवेदी को यह बाते भली–भांति ज्ञात है। समय–समय पर उनकी लेखनी इन तथ्यों की महिमा गाती रही है। प्रमाणार्थ निम्नांकित उदाहरण दृष्टव्य है–

'सिद्धि की बेला न हो,

हो साधना ही यह निरंतर

हो निरंतर ही तपस्या रहे उलझी सी समस्या

जागरित सा रहे उर में अखल का ही स्वयं अनुस्वर।''

व्याक्तिं विश्व के मस्तक पर निज

करुणापाणि धरो

भव की व्यथा हरो।

भारत मां के एक वीर सपूत थे महाराणा प्रताप। जिन्होंने सब कुछ लूट जाने पर भी वैरियों के समक्ष सिर न झुकाया। उन्होंने घास की रोटियां खाई, वनों में रहे, चट्टानों पर सोये। अपने भूख से बिलबिलाते बच्चों को देखकर बी वे दृढ़ संकल्प से विचलित न हुए। वह मृत्यु की गोद में सो गये, पर झुके नहीं। भारतीय इतिहास के इस जगमगति सूर्य की आभा को जन–जन तक पहुंचाने के पुण्य कार्य से कवि द्विवेदी अपने को रोक न सके। प्रताप पर लिखी उनकी कविता की कुछ पंक्तियां निम्नांकित हैं।

''कला हुआ तुम्हारा राजतिलक, बन गये आज ही बैरागी उत्फुल्ल मेघ–मदिर सरसिज में, यह कैसी तरुण–अरुण आगी क्या कहां? कि तब–तक तुम न कभी वैभव सिंचित श्रृंगार करो। क्या कहां? कि जब तक तुन न विगत गौरव स्वदेश उद्धार करो।

जब देश अंग्रेजों के दासता–पाश में जकड़ा हुआ था, कवि द्विवेदी का अविर्भाव हुआ। उन्होंने देश की पराधीनावस्था का अवलोकन किया तो उनका देश–प्रेमी हृदय चीत्कार कर उठा। उन्होंने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली कि देश के स्वाधीन कराने के पावन यज्ञ में वे अपनी आहुति देने से कभी न चूकेगें, इसलिए बड़े निडर शब्दों में उन्होंने लिखा है कि हमारी पराधीनता का कारण है। अपने पौरुष, वीरत्व, स्वाभिमान को खो बैठना। यदि स्वाधीन होना है तो इन सब को फिर पाना होगा। इस कार्य के लिए उन्होंने मदद ली, उन क्रांति वीरों की जीवन गाथाओं की, जो अपने प्राण–हथेली पर रखकर मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए अंग्रेजों से जूझ रहे थे। क्रांति–दल के सेनापति चन्द्रशेखर आजाद की बलिदान गाधा उन्होंने ऐसे ओजस्वी शब्दों में गाई की पत्थरों में भी जीवन जाग उठे–

''कहा किसी ने बढ़कर आकर जोर से

खून हो गया, तुम्हें नहीं है ज्ञात क्या
यही पास में इसी अल्फ्रेड पार्क में
एक तरुण ने द्वन्द्व अनेकों से किया,
चलीं गोलियां इधर–उधर बी गोलियां
क्षत–विक्षत भरपूर विपक्षीगण हुए
चोंटे आई, रक्त बहा, पर अन्त में
एकाकी असहाय स्वयं ही वह तरुण
अपने को ही मार धरा पर सो गया।

इसी प्रकार जब अंग्रेजों के अत्याचारों को संघर्ष झेलते हुए महान क्रांतिकारी जतीन्द्रनाथ जेल में ही शहीद हो गये तो द्विवेदी जी अपने हृदय में उठती भावनाओं के ज्वार को विद्रोह की प्रचण्ड अग्नि को रोक न पाये निर्भय स्वर में उन्हें श्रदांजलि अर्पित करते हुए लिखा–

''प्राणों पर इतनी ममता और स्वतंत्रता का सौदा
बिना तेल के दीपक जलाने का है कठिन मसौदा
आंसू बिखराते बीतेंगी, जलती जीवन घड़ियां
बिना चढ़ाये शीश नहीं टुटेगी मां की कड़ियां
दुनिया में जीने का सबसे सुन्दर मधुर तकाजा
हो शहीद, उठने दो अपना फूलों भरा जनाजा।

भारतीय परतंत्रता की चुनौतियों पर द्विवेजी जी ने खूब लेखनी चलाई है। उनकी यह अदम्य आकांक्षा रही है कि देश इतना समर्थ बने की इन चुनौतियों को आसानी से झेल जाये। इसलिए देश के तरुणों से स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि आज देश को सबसे अधिक आवश्यकता तुम्हारी है। यह समय हिंसा–अहिंसा के विवाद में पड़ने का नहीं है। तुम्हें इस समय देश, अपनी मां–बहनों की लज्जा बचाने के लिए बैरियों से जूझना है–

''तरुणाई का आज तकाजा मां–बहनों की लाज जहां
लूट रहे हो अत्याचारी, निर्जन पाकर आज जहां
हिंसा और अहिंसा की चर्चा करने का समय नहीं
सधवा का सिंदूर दूर होने से पहले जूझ वहीं।

अतः देशवासियों के हृदयों में छाई निराशा को दूर करने वाली, अत्यधिक उत्साह भरी उनकी निम्नांकित काव्य पंक्तियां उद्धरणीय है, जिन्हें पढ़कर मन समझ जाता है कि निराश होना ठीक नहीं, कभी न कभी आशा का आंचल हमें अपनी छाया में अवश्य लेगा, हम स्वाधीन हो सकेंगे

''मायूस न हो फिर भी, मेरे हम ख्याल दोस्त
दिन दूर नहीं जब इंकलाब फिर आयेगा।

वह क्रान्ति उठेगी इसी देश के जन–जन में सूरज निकलेगा, अन्धकार ढल जायेगा।

महात्मा गांधी के विचारों से दुनिया के तमाम लेखक और कवि प्रभावित थे। डॉ. रामकुमार वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पंत, सियाराम शरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, दिनकर, माखन लाल पर इनमें सबसे अधिक चमत्कृत हुए कवि सोहन लाल द्विवेदी उन्हें बापू के मनोमुग्धकारी, सर्वगुण संपन्न व्यक्ति ने ऐसा मोहित किया कि उनकी हर रचना में वे ही दिखाई देते है। यदि यह कहा जाये कि उनका सारा काव्य बापूमय है तो अतिशयोक्ति न होगी। इन पर बापू के अपरिमित प्रभाव को देखकर प्रख्यात साहित्यकार एवं नाटककार 'सेठ गोविन्ददास' ने लिखा है–

श्री द्विवेदी गांधीवादी कवि हैं। इनकी रचनाओं में गांधी जी के दर्शन और दृष्टिकोंण की अभिव्यक्ति हुई है।''

गांधी जी के अप्रतिम व्यक्तित्व का एक चित्र उनके निम्नांकित शब्दों में दर्शनीय है–

''कितना तप तेज पुण्य पदरज में भरा हुआ बापू मेरे

तुम जहां बसे, बस गया वहीं पर तीर्थ, खड़ी जनता घेरे।

उनकी दृष्टि में गांधी जी वह प्रकाश पुंज थे जिसके दिव्य प्रकाश के युग–युग का अन्धकार दूर भागता था, जिन्होंने आत्माहुति के महायज्ञ द्वारा तथा सत्य का केतु फहराकर केवल भारत ही नहीं, विश्व की आक्रांत जनता को जीवन–संग्राम में जूझने के लिये नूतन अस्त्र दिया। इसलिए कवि उनमें देवत्व की प्रतिष्ठा करते हुए लिखते हैं–

''वह मलय पवन, वह है आंधी वह मनमोहन, वह है गांधी झुकता हिमाद्रि जिसके पदतल अपना गौरव निःशेष लिये।

बापू में उन्हें राम, रहीम, बुद्ध सभी का पावन आलोक दिखाई देता है। उनकी लेखनी से समदर्शी बापू की वन्दना के लिये निःसृत निम्नलिखित पंक्तियां दृष्टव्य हैं–

समा गया अगणित प्राणों, धारण करके अगणित रूप

ओ मेरे प्यारे बापू, कितना विराट तेरा स्वरूप।

कवि द्विवेदी की यह अदम्य इच्छा है कि गांधी जी के हृदय की आग उनकी जैसी त्याग भावना समस्त देशवासियों को मिल जाये, तभी वे आजादी के आह्वान में प्राण–प्रण से लग सकेंगे तथा देश पर तन–मन–धन बलिदान करने में तनिक भी न हिचकिचाएंगें।

''मिले तुम्हारी आग देश, आजादी आह्वान करें

मिले तुम्हारे त्याग देश को, तन–मन–धन बलिदान करें।

गांधी जी स्थापित 'सेवाग्राम' को कवि द्विवेदी पृथ्वी का स्वर्ग मानते हैं। इस सेवाग्राम की महिमा का गान उन्होंने अपनी कई कविताओं में किया है–

''होता जहां प्रभात, ये कृषि–मुनियों की जमात।

जाती चली खेतों में, लग जाते जोतने में बोने में।

जगता अभिमान इन्हें, कृषक के होने में।

इस प्रकार द्विवेदी जी की काव्य–साधना का मूल प्रेरणा स्रोत गांधी जी रहे हैं। 'राम लाल पारीख' का निम्नांकित (भूतपूर्व महामंत्री, गुजरात विद्यापीठ) कथन उद्धरणीय है–

''पण्डित जी के काव्य में गांधी जी के व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा भक्ति, उनकी सत्याग्रह में अटूट आस्था, हिन्दू मुसलमानों में एकता की कामना, खादी प्रचार, किसानों का संगठन आदि राष्ट्रीय भावनाएं एवं समस्याएं सजीव और ओजपूर्ण शैली में प्रस्तुत हुई है।

कवि द्विवेदी का तो अधिकांश काव्य लोकाभ्युदय से प्रेरित होकर लिखा गया है। राज्य द्वारा उपेक्षित किसानों, मजदूरों, स्त्रियों पीड़ितों सभी की तरफ उनकी दृष्टि गई है। सभी के दुःखों कष्टों की करुण गाथा उन्होंने गाई है तथा सबके कल्याण की मंगल–कामना उनके गीतों में ध्वनित हुई है। जिस राजनीति का प्रमुख कर्तव्य लोक–कल्याण है, उसी के ठेकेदार करोड़पति देश की समृद्धि के मूलकर्ता मेहनत करने वाले किसानों की दुर्दशा करने में लगे है–

''राज्य–तंत्र के यंत्र बने धनपति करते है राज जहां,
यह क्या किया पाप तुमने? घुटने जीवन के साज यहां।
आग काफ्खू लो कंगालों में कंकालों से प्राण भरो।
उठो आज इस जीर्ण पुरातन भव में नवनिर्माण करो।

इस प्रकार राष्ट्रीय चेतना की लम्बी श्रृंखला में पं. सोहन लाल द्विवेदी भी अपना स्थान उसी प्रकार रखते हैं, जैसे अन्य राष्ट्रीय कवि। उनका समूचा लेखन अतीत, वर्तमान और भविष्य को रूपान्तरित करता है। उनका व्यक्तिगत जीवन संघर्ष एक ऐसे साहित्यकार के रूप में परिलक्षित होता है, जो समूचे भारत को विकास के रास्ते पर ले जाना चाहता है। ये राष्ट्रीयता के उन मूल स्रोतों तक भी गए हैं, जहां से सामाजिक न्याय, आपसी प्रेम, सौहार्द्र और भाई–चारे की लड़ाई लड़ी जा सके। उनकी वाणी में हमारे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्य मौजूद मिलेंगे। जो किसी राष्ट्र को समुन्नत और सुखी बनाते हैं। उन्होंने साहित्य में चाहे जिस विधा में लिखा हो एक तरह की ओजस्विता, संघर्षशीलता का गहरा प्रभाव उनके यहां विद्यमान मिलता है। उनका लेखन सहजता, शुचिता, और राष्ट्रीय भावना से सराबोर है। पं. सोहन लाल द्विवेदी की भाषा में बहुत गर्जन–तर्जन नहीं हैं। लेकिन जो सादगी और स्वाभाविकता है, वह पाठक को प्रभावित करती है। अपने भावों को बिना अतिरिक्त प्रयास के सम्प्रेषित करने में असमर्थ है।

पं. सोहन लाल द्विवेदी का रचनात्मक संघर्ष एक ऐसे समर्पित कार्यकर्ता है, जिसकी राष्ट्रीयता स्वतंत्रता के मूल्यों को समझने की कूवत्, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रीय जागरण के तमाम मूल्यों को विकसित करने में सम्पूर्ण जीवन लगा दिया, फिर भी रचनात्मकता का मूल्यांकन मेरी दृष्टि में अभी भी ठीक तरीके से नहीं हो पाया। अतः उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के उज्ज्वल पक्षों की पहचाना जाए और ये बताया जाय कि आजादी ऐसे नहीं मिली।

मेरा मानना है कि आने वाले समय में सोहन लाल द्विवेदी जैसे मूल्यवान सहजता के प्रतीक और साधक के महत्व को समझा जायेगा जो उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का घोषणा पत्र है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पं. सोहन लाल द्विवेदी के काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. मृदुला द्विवेदी, दुर्गा पब्लिकेशन्स, ए–407/7 साउथ, गामड़ी दिल्ली–110053
2. मुक्तिगंधा, सोहन लाल द्विवेदी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23 दरियागंज दिल्ली 6, संस्करण, 1972
3. जय गांधी सोहन लाल द्विवेदी, ज्ञान भारतीय 4/14 रूप नगर दिल्ली, 11007, प्रथम संस्करण सन्, 1975 ई.
4. युगाधार, सोहन लाल द्विवेदी, इण्डियन प्रेस प्रयाग, संस्करण 1971
5. भैरवी; सोहन लाल द्विवेदी, इण्डियन प्रेस प्रयाग, संस्करण 1968
6. प्रभाती सोहन लाल द्विवेदी, साहित्य भवन प्रा.लि. प्रयाग, संस्करण 1975
7. संजीवनी, सोहन लाल द्विवेदी, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली–6 संस्करण 1986